अमृत वाणी

विश्वविद्यालय महापुरुषों के निर्माण के कारखाने हैं और अध्यापक उन्हें बनाने वाले कारीगर हैं।

-रवींद्र,

राज काज

कैसे रुकेगी यह चोरी

सीबीआई प्रकरण के माध्यम से कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने इशारों ही इशारों में कह दिया कि कांग्रेस चौकीदार को चारी करने नहीं देगी। यह सुनकर सामान्यजन के मस्तिष्क में सवाल उठ रहा है कि यदि देश का चौकीदार पर ही चोरी साबित हो रहा है तो उसे बदलना ही बेहतर होगा, क्योंकि या तो वो वाकई चौकीदार होगा या फिर पूरी तरह से चोर होगा। गौरतलब है कि सीबीआई प्रकरण सामने आने के बाद से कांग्रेस आक्रामक रुख अख्तियार किए हुए है और दिल्ली मुख्यालय के बाहर कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी के नेतृत्व में विरोध.प्रदर्शन किया गया और गिरफ्तारियां दी गईं, जिससे यह आभास हो रहा है कि वाकई कांग्रेस बड़े स्तर पर होने वाली चोरी को रोकने का प्रयास कर रही है, लेकिन जिसके हाथों में खजाने की चाबी है और यदि वही चौकीदार चाहता है कि चोरी होती रहे तो फिर कांग्रेस भी कैसे उस चोरी को रोक सकती है। राहुल का मानना है कि राफेल सौदे के जरिए प्रधानमंत्री मोदी अनिल अंबानी की जेब में 30 हजार करोड़ रुपए डाल चुके हैं। इस तरह राजनीतिक तौर पर यह मामला पेंचीदा हो चला है, जिसमें सरकार बैकफुट पर जाती दिख रही है।

राजपक्षे के बहाने

श्रीलंका में एक तरह का तख्तापलट हुआ और देखते ही देखते महिंद्रा राजपक्षे प्रधानमंत्री बना दिए गए। गौरतलब है कि राजपक्षे हाल ही में भारत आए थे और श्रीलंका के साथ रिश्ते मजबूत करने पर जोर देकर गए थे। यही नहीं बल्कि इससे पहले जब श्रीलंका में एक बैठक के दौरान राष्ट्रपति सिरीसेना और प्रधानमंत्री विक्रमसिंघे भारत के निवेश को लेकर आपस में भिड़ गए थे, तब भी सवाल उठे थे कि आखिर निवेश को लेकर इतनी मारामारी क्योंकर हो रही है, लेकिन इसका सीधा संबंध भारत के साथ संबंध बनाए रखने से ही था। इसलिए अब जबकि श्रीलंका के नए प्रधानमंत्री के तौर पर राजपक्षे ने शपथ ले ली है तो उम्मीद जाहिर की जा रही है कि अब श्रीलंका के भारत से बेहतर संबंध होंगे और रिश्ते पहले से भी ज्यादा मजबूत हो सकेंगे। गौरतलब है कि श्रीलंका के पूर्व राष्ट्रपति महिंदा राजपक्षे ने शुक्रवार शाम राष्ट्रपति सचिवालय में नए प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ ले ली है और यह पूरी प्रक्रिया राष्ट्रपति मैत्रीपाला सिरीसेना ने रानिल विक्रमसिंघे को हटाकर की है।

मोदी मंत्र कितना प्रभावी

विधानसभा में पार्टी की जीत सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नमो एप के जरिए बूथ कार्यकर्ताओं को मंत्र दे रहे हैं। वो बता रहे हैं कि इन चुनावों में हमारे तीन एजेंडे हैंए श्पहला विकासए दूसरा तेज गति से विकास और तीसरा सबके लिए विकास। प्रधानमंत्री बताते हैं कि भाजपा के कारण ही विकास देश में चुनाव का एजेंडा बन गया हैए लेकिन इस पर सवाल करने वाले पूछ रहे हैं कि यदि विकास ही चुनाव का मुद्दा है तो फिर जाति और धर्म पर इस कदर बातें क्योंकर हो रही हैंए क्या ये विषय भी किसी विकास में शामिल होते हैंघ् जानकारों की मानें तो प्रधानमंत्री मोदी भले ही कार्यकर्ताओं को जीत का मंत्र दे देंए लेकिन जमीनी कार्यकर्ता इस समय अपनी ही सरकारों से इस कदर नाराज है कि वह अब वोट की खातिर मतदाताओं के घरों में दस्तक देने से कतरा रहा है। ऐसे में पार्टी की जीत कैसे सुनिश्चित होगी आसानी से समझा जा सकता है।

ये क्या हुआ और कैसे हुआ

मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस में ऐसा कुछ घटित होता चला जा रहा है जिसे देख लोग पूछने पर विवश हैं कि श्ये क्या हुआ कैसे हुआ दरअसल एक दिन पहले खबर आती है कि भाजपा विधायक संजय शर्मा और पूर्व विधायक कमला पट आर्य समेत गुलाब सिंह किरार ने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर ली और उनका पार्टी में स्वागत किया गया है। इसके बाद जैसे ही मालूम चलता है कि गुलाब सिंह किरार कोई और नहीं बल्कि व्यापमं घोटाले के प्रमुख आरोपियों में से एक हैं तो मानों प्रदेश कांग्रेस के पैरों तले जमीन ही खिसक जाती है। इसी के साथ बयान आता है कि किरार कांग्रेस की सदस्यता नहीं लिए हैं और जो खबरें आ रही हैं वो गलत ही हैं। अब इस तरह की बात कहने वालों को विरोधियों ने घेरना शुरु कर दिया और प्रदेश कांग्रेस कार्यालय से सोशल मीडिया पर डाला गया वो बयान दिखाया जाने लगा जिसमें इन तीनों नेताओं को कांग्रेस में शामिल होने पर स्वागत वंदन अभिनंदन का संदेश दिया गया था। बहरहाल सब कुछ वैसा नहीं है जैसा दिख रहा है क्योंकि कांग्रेस इस समय फूंक.फूंक कर कदम आगे बढ़ा रही है इसलिए भी छोटी से छोटी गलती भी उसकी पकड़ी जा रही है।

भाजपा के शार्प शूटर

सीबीआई प्रकरण को माध्यम बनाकर एक बार फिर शिवसेना ने भाजपा पर निशाना साधा है। दरअसल शिवसेना ने सीबीआई के स्पेशल डायरेक्टर राकेश अस्थाना को लेकर कहा जा रहा है कि शगुजरात केडर के अधिकारी राकेश अस्थाना मोदी.शाह के अत्यन्त विश्वसनीय हैं। इसमें आपत्तिजनक कुछ भी नहींए लेकिन अस्थाना की ईमानदारी जरुर सवालों के घेरे में है। वह भाजपा के शार्प शूटर की तरह काम कर रहे हैं। इस मामले में भाजपा कुछ भी कहने के लायक नहीं बची है इसलिए शिवसेना ने सीबीआई, आरबीआई और ईडी प्रकरण को उछालते हुए सीधे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा है। यहां उन्होंने मोदी जी की जापान यात्रा पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। चुटकी लेने वाले कह रहे हैं कि अब देखना यह है कि भाजपा के अन्य शार्प शूटर इसका जवाब कैसे और क्या देते हैं, क्योंकि सामान्य नेता और मंत्री तो कुछ भी बोलने की स्थिति में नजर नहीं आ रहे हैं।

मेडिकल शिक्षा

में नैतिक मूल्यों की सार्थक पहल

देश में आज डॉक्टर एवं अस्पताल लूट घंसौट, लापरवाही, भ्रष्टाचार, अनैतिकता एवं अमानवीयता में शुमार हो चुके है, आए दिन ऐसे मामले प्रकाश में आते हैं कि अनियमितता एवं लापरवाही के कारण मरीज का इलाज ठीक ढंग से न हो पाने के कारण मरीज की मौत हो गयी या उससे गलत वसूली या लूटपाट की गयी।

सरकारी अस्पतालों में जहां चिकित्सा सुविधाओं एवं दक्ष डॉक्टरों का अभाव होता है, वहीं निजी अस्पतालों में आज के भगवान रूपी डॉक्टर जो मात्र अपनी पेशा के दौरान वसूली व लूटपाट ही जानते हैं। उनके लिये मरीजों का ठीक तरीके से देखभाल कर इलाज करना प्राथमिकता नहीं होती, उन पर धन वसूलने का नशा इस कदर हावी होती है कि वह उन्हें सच्चा सेवक के स्थान पर शैतान बना देता है। जो शर्मनाक ही नहीं बल्कि डॉक्टरी पेशा के लिए बहुत ही घृणित है। इन अमानवीयता एवं घृणा की बढ़ती स्थितियों पर नियंत्रण की अपेक्षा लगातार महसूस की जाती रही है, इस दिशा में एक सार्थक पहल हुई है कि एमबीबीएस के पाठ्यक्रम में व्यापक परिवर्तन होने जा रहा है, जिसमें उन्हें चिकित्सा का तकनीकी ज्ञान देने के साथ-साथ नैतिक मूल्यों का प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। वह स्वागतयोग्य है कि अगले सत्र से एमबीबीएस छात्र जिस परिवर्तित पाठ्यक्रम से परिचित होंगे उसमें उन्हें मरीजों के साथ सही तरह से पेश आने की शिक्षा दी जाएगी।

डॉक्टर का पेशा एक विशिष्ट पेशा है। एक डॉक्टर को भगवान का दर्जा दिया जाता है, इसलिये इसकी विशिष्टता और गरिमा बनाए रखी जानी चाहिए। एक कुशल चिकित्सक वह है जो न केवल रोग की सही तरह पहचान कर प्रभावी उपचार करें, बल्कि रोगी को जल्द ठीक होने का भरोसा भी दिलाए। कई बार वह भरोसा, उपचार में रामबाण की तरह काम करता है। ऐसे में एमबीबीएस छात्रों के पाठ्यक्रम में डॉक्टरों और मरीजों के रिश्ते को भी शामिल किया जाना उचित ही है। बदले हुए पाठ्यक्रमों में एमबीबीएस छात्रों को उपचार के दौरान रोगियों से प्रभावी संवाद के तौर-तरीकों से परिचित कराने के साथ ही उन्हें नैतिक शिक्षा का प्रभावी प्रशिक्षण दिया जायेगा। एक व्यक्ति डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, जज बनने से पहले अच्छा इंसान बने, तभी वह अपने पेशे के साथ न्याय कर सकते हैं।

नैतिक शिक्षा को शैक्षणिक स्तर के पाठ्यक्रम का हिस्सा होना बहुत जरूरी है। क्योंकि आज के युग की एक बड़ी समस्या यही है कि भावी पीढ़ी शिक्षित तो हो रही है, लेकिन अपेक्षित संस्कारों, नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का उनमें नितांत अभाव होता है। समाज और राष्ट्र के हित के लिए वह आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है कि स्कूली शिक्षा से लेकर पेशेवर शिक्षा तक, सब जगह नैतिक शिक्षा को विशेष महत्व दिया जाए। शिक्षित होना तभी सार्थक है जब हमारे छात्र बेहतर नागरिक भी बनें। अन्यथा सारी व्यवस्थाएं, जिम्मेदारियां एवं राष्ट्रीय चरित्र धुंधला होता जायेगा, स्थितियां अनियंत्रित हो जायेगी। देखने में आ रहा है कि नियंत्रण से बाहर होती हमारी व्यवस्था हमारे लोक जीवन को अस्त-व्यस्त कर रही है। प्रमुख रूप से गलती डॉक्टरों के शिक्षण-प्रशिक्षण में है। कहीं, क्या कोई अनुशासन या नियंत्रण है? निरंतर मरीजों से लूटपाट एवं लापरवाही के मामले सामने आ रहा है, चिकित्सा का क्षेत्र सेवा का मिशन न होकर एक व्यवसाय हो गया है। डॉक्टरों की गैरजिम्मेदारी के कारण अनेक मरीज अपने जीवन से हाथ धो बैठते हैं, कोई जिम्मेदारी नहीं लेता- कोई दंड नहीं पाता। भारत में मुर्गी चुराने की सजा छह महीने की है। पर एक मरीज के जीवन से खिलवाड़ करने के लिए कोई दोषी नहीं, कोई सजा नहीं। चिकित्सा क्षेत्र में बढ़ रहा इस तरह का अपराधीकरण अपने चरम बिन्दु पर है। वर्ष 2013 के एक शोध के मुताबिक दुनिया में हर साल करीब 4.3 करोड़ लोग असुरक्षित चिकित्सीय देखरेख के कारण दुर्घटना का शिकार होते हैं। रिपोर्ट में पहली बार ये पता लगाने की कोशिश की गई थी कि चिकित्सीय भूल के कारण हुई दुर्घटना में कितने साल की मानवीय जिंदगी का नुकसान होता है ।

सरकारी स्वास्थ्य ढांचे से इतर निजी क्षेत्र ने अपना एक अहम स्थान बना लिया है। जिसने चिकित्सा की मूल भावना को ही धुंधला दिया है। निजी अस्पतालों की स्थिति तो बहुत डरावनी है, वहां पैसे हड़पने के लिए लोगों को बीमारी के नाम पर डराया जाता है, उन्हें वो टेस्ट करने को कहा जाता है या फिर उन पर वो सर्जरी और ऑपरेशन किए जाते हैं जिसकी कोई जरूरत नहीं होती। साथ ही डॉक्टरी पेशे में कमीशन के चलन भी बहुत बढ़ते जा रहे हैं, यानि डॉक्टरों की दवा कंपनियों या डायग्नोस्टिक सेंटरों के बीच कमीशन को लेकर सांठगांठ। भारत में सरकारी स्वास्थ्य सुविधाएं खस्ताहाल होने के कारण निजी अस्पतालों का 80 प्रतिशत बाजार पर कब्जा है। आरोप लग रहे हैं कि कानूनों के कमजोर क्रियान्वयन के कारण निजी अस्पतालों के जवाबदेही की भारी कमी है। अपराधी केवल वे ही नहीं जिनके हाथ में ए.के.47 है। वे भी हैं जो चिकित्सा से जुड़ी आचार-संहिता को तोड़ रहे हैं या जिनके दिमागों में येन-केन-प्रकारेण धन कमाने की अपराध भावना है। आज डाक्टरी पेशा नियंत्रण से बाहर हो गया है। स्वार्थी सोच वाले व्यक्ति नियंत्रण से बाहर हो गए हैं और सामान्य आदमी के लिए जीवन नियंत्रण से बाहर हो गया है। डॉक्टर पैसे की संस्कृति यानी स्वर्ण मृग के पीछे भाग रहे हैं- चरित्र रूपी सीता पूर्णतः असुरक्षित है। आज हमारे पास कोई राम या हनुमान भी नहीं है। अनेक राष्ट्र-पुरुष हो गए हैं जिन्होंने चरित्र की रोशनी दी, चरित्र को स्वयं जीया, लेकिन भगवानरूपी डॉक्टर अपने चरित्र एवं नैतिकता को दीवार पर लटकाकर स्वच्छंद है। इसलिये एमबीबीएस के पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों के प्रशिक्षण को आवश्यक समझा गया, क्योंकि बीते कुछ समय से मरीजों और उनके परिजनों की डॉक्टरों एवं अस्पतालों से शिकायतें बढ़ी हैं। कई बार तो तीमारदारों और डॉक्टरों में मारपीट की नौबत तक आ जाती है। इसी तरह मेडिकल कॉलेजों के परिसर अथवा उनके इर्द-गिर्द वैसे झगड़े भी खूब बढ़े हैं जिनमें एक पक्ष जुनियर डॉक्टरों का होता है। इसके मूल में कहीं न कहीं सदाचरण का अभाव है तो इसे निराधार नहीं कहा जा सकता।

खेद का विषय है कि हमारी शिक्षा केवल बौद्धिक विकास पर ध्यान देती है। हमारी शिक्षा शिक्षार्थी में बोध जाग्रत नहीं करती, वह जिज्ञासा नहीं जगाती जो स्वयं सत्य को खोजने के लिए प्रेरित करे और आत्मज्ञान की ओर ले जाये, सही शिक्षा वही हो सकती है जो शिक्षार्थी में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित कर सके। एमबीबीएस छात्रों को इस तरह से प्रशिक्षित करना नितांत जरूरी है। इसके लिये धीरे-धीरे अब माहौल बना है और ऐसा लगता है कि पाठ्यक्रम में तब्दीली करके एक तरह की एक बड़ी भूल को सुधारने का प्रयत्न हो रहा है। जो भी हो, वह अच्छा है कि कुछ देर से सही, एमबीबीएस पाठ्यक्रम में बदलाव के बारे में सोचा गया और उसमें नई तकनीक के साथ ऐसे पाठ भी शामिल किए जा रहे हैं ताकि डॉक्टर फैसले लेने की क्षमता से भी सक्षम हो सके। अपने नैतिक जिम्मेदारियों को भी समझ सके। मरीजों के साथ मानवीय व्यवहार करने की पात्रता विकसित कर सके। हर राष्ट्र की तरह हमारी उम्मीदें भी डॉक्टर' थी और हैं। पर अब तक तो उसने भी अपने आचरण से राष्ट्र को आशा और भरोसा नहीं बंधाया। वह भी अपसंस्कृति और अपराधीकरण की तरफ मुड़ गई। वे कुछ प्राप्त करने के लिए सब कुछ करने को तैयार रहते हैं। संस्कृति और चरित्र के मूल्यों को उन्होंने समझा ही नहीं, न ही उन्हें समझाया गया। तब अनभिज्ञ यह डॉक्टर वर्ग उनकी स्थापना के लिए कैसे संकल्पबद्ध हो सकता है।

राष्ट्रीय जीवन की कुछ सम्पदाएं ऐसी हैं कि अगर उन्हें रोज नहीं संभाला जाए या रोज नया नहीं किया जाए तो वे खो जाती हैं। कुछ सम्पदाएं ऐसी हैं जो अगर पुरानी हो जाएं तो सड़ जाती हैं। कुछ सम्पदाएं ऐसी हैं कि अगर आप आश्वस्त हो जाएं कि वे आपके हाथ में हैं तो आपके हाथ रिक्त हो जाते हैं। इन्हें स्वयँ जीकर ही जीवित रखा जाता है। डॉक्टरों एवं अस्पतालों को नैतिक बनने की जिम्मेदारी निभानी ही होगी, तभी वे चिकित्सा के पेशे को शिखर दें पाएंगे।

-ललित गर्ग,

(ये लेखक के अपने विचार है)

अयोध्या पर 1990 के दशक की स्थिति पैदा करने के संकेत

अयोध्या के विवादास्पद स्थल पर राममंदिर निर्माण का मुद्दा राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ से आगे बढ़ते हुए अब साधु.संतों के अभियान तक पहुंच गया है। हमको आपको ही नहीं, स्वयं भाजपा को भी कुछ महीने पूर्व तक उम्मीद नहीं थी कि राममंदिर का मुद्दा इस तरह उफान मारता हुआ उनके सामने आकर बड़ी चुनौती के रुप में खड़ा हो जाएगा। करीब तीन दशक बाद राजधानी दिल्ली ने साधु.संतों का इतना बड़ा आयोजन हुआ है। तालकटोरा स्टेडियम से निकलती आवाजें दो दिनों तक मीडिया की सुर्खियां बनी रहीं। 1990 के दशक में जब राममंदिर निर्माण का आंदोलन चरम पर था, हमने ऐसे दृश्य जगह.जगह देखे थे। संत सम्मेलन के दूसरे और अंतिम दिन जो प्रस्ताव पारित हुआ उसका शीर्षक देखिए. सन्तों का यह धर्मादेश . कानून बनाओ या अध्यादेश। वस्तुतः कार्यक्रम के बैनर पर ही लिखा था, धर्मादेश। इसका अर्थ हुआ कि साधु.संतों ने अपने प्रस्ताव को धर्मसत्ता के आदेश के रुप में सरकार के सामने रखा है। जरा ध्यान दीजिए, 5 अक्टूबर को विश्वहिन्दू परिषद एवं संतों की उच्चाधिकार समिति को बैठक हुई जिसमें सरकार से संसद में कानून बनाकर मंदिर निर्माण का रास्ता प्रशस्त करने की मांग की गई उसके बाद विजयादशमी के वार्षिक संबोधन में संघ प्रमुख मोहन भागवत ने भी यही कहा कि कुछ भी करिए, चाहे संसद में कानून बनाना हो तो बने लेकिन मंदिर अब बनना चाहिए और अब संत सम्मेलन। इस तरह एक महीने के अंदर ही लगभग वैसा ही माहौल निर्मित होता दिख रहा है जैसा 1990 के दशक में था। संघ की तीन दिवसीय कार्यकारिणी की मुंबई बैठक में भी 2 नवंबर को सरकार्यवाह भैयाजी जोशी ने यह पूछने पर कि क्या वह पहले तरह मंदिर निर्माण के लिए आंदोलन करेगा, कहा कि आवश्यकता हुई तो अवश्य करेंगे। संघ मंदिर निर्माण आंदोलन में सीधे शामिल नहीं था लेकिन योजना से लेकर उसे साकार करने का पूरा सूत्र उसके हाथों ही था। हालांकि मंदिर आंदोलन ने देश में आलोड़न का स्वरुप तभी लिया जब भाजपा ने उसे अपनाया। भाजपा इसे प्रस्ताव के रुप में स्वीकार करे इसके पीछे भी संघ की ही भूमिका थी। यह संभव नहीं कि संतों का इतना बड़ा कार्यक्रम हो और संघ ने इससे अपने को दूर रखा हो। साधु.संतो के जमावड़े का महत्व वह नहीं समझ सकते जिनको इनकी शक्ति का ज्ञान नहीं है। संत सम्मेलन में हिन्दू धर्म के सभी पंथों, पीठों, अखाड़ों, प्रमुख मठों आदि की उपस्थिति रही। साधु.संतो के मानने वालों की अपार संख्या है। इसलिए इनकी शक्ति को महत्वहीन मानने की भूल नहीं करनी चाहिए। इन सबको फिर से साथ लाने के लिए नेपथ्य में कितना प्रयास हुआ होगा, दिल्ली में उनके रहने से लेकर भोजनादि तथा सभा स्थल तक लाने.ले जाने तथा सभा से संबंधित सारी व्यवस्थायें अपने आप तो नहीं हो गई होंगी। इतना व्यवस्थित कार्यक्रम का अर्थ ही है कि सरकार सहित राजनीतिक पार्टियों को दबाव में लाने तथा देश में फिर से मंदिर निर्माण के पक्ष में माहौल बनाने की तैयारी हो चुकी है।

यह कहना आसान है कि जब चुनाव सिर पर है तभी इनको मंदिर याद आया है। यह प्रश्न निस्संदेह उठेगा कि चाहे विहिप हो या संघ या साधु.संत इनने यही समय क्यों चुनाघ् निस्संदेह, मंदिर समर्थक अगर कुछ पहले से दबाव के कार्यक्रम आरंभ करते तो यह प्रश्न नहीं उठता कि भाजपा को चुनाव में लाभ पहुंचाने के लिए मंदिर का मुद्दा उठा दिया गया है। हालांकि इसमें सबसे ज्यादा राजनीतिक जोखिम किसी का बढ़ा है तो वह भाजपा ही है। अगर नरेन्द्र मोदी सरकार अध्यादेश नहीं लाती है तो संदेश यह जाएगा कि ये मंदिर बनाना नहीं चाहते और इससे उसके मंदिर समर्थक मतदाता नाराज होकर दूर जा सकते हैं।

अवधेश कुमार

(ये लेखक के अपने विचार है)

यात्रा एक अनुभूति

अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ के तत्त्वावधान में पोंडा गोवा में मुनिश्री 108 प्रमुख सागर जी के सान्निध्य में एक संगोष्ठी त्रिदिवसीय आयोजित की गयी संगोष्ठी के विषय 1शिक्षा को जन जन तक फैलाने हेतु क्या करना चाहिए 2 स्वास्थ्य सेवाएं क्या कैसे क्यों 3 जैन धरम की प्रभावना के उपाय 4 पत्र पत्रिकाओं को विश्व व्यापी कैसे बनाये।

इस संघ के अध्यक्ष शैलेन्द्र अलीगढ और अखिल बंसल के कुशल नेतृत्व में इस संगोष्ठी में उत्तरप्रदेश राजस्थान, मध्य प्रदेश ,महाराष्ट्र ,दिल्ली से लगभग 40 पत्रकार ,संपादक और विद्वतजन उपस्थित हुए। मुनि श्री की उपस्थिति में और अखिल जी के कुशल सञ्चालन में तीन दिन तक लगभग 6 सत्रों में उपरोक्त बिंदुओं पर गंभीर चर्चा हुई। जिसके परिप्रेक्ष्य में मुनि श्री ने पत्रकारों की महती भूमिका की उपदेयता पर प्रकाश डाला। आज के समय जैन समाज में शिक्षा के लिए उच्च स्तरीय संस्थान का उद्यम करना होगा जिससे हम अपने धरम के अनुकूल जैन शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा पर ज़ोर दिया। मुनि श्री का कहना हैं की जब तक नैतिक शिक्षा से चरित्र निर्माण नहीं होगा तब तक अन्य शिक्षा से हम नौकरी पा लेंगे पर चरित्र निर्माण न होने से हमारा लक्ष्य पूरा नहीं हो पायेगा। सभी सत्रों में उपस्थित विद्यमानों के अपने अपने विचार खुल कर रखे और मुनि श्री ने प्रत्येक सत्र के अंत में विषय वस्तु पर अपनी राय रखी और

उठने वाली भ्रांतियों को दूर किया। मुनिश्री ने अपने वात्सल्य से हम सबको अत्यंत प्रभावित किया। इसी बीच एक दिन गोवा भ्रमण का कार्यक्रम रखा गया जिसमे सभी ने उत्साह पूर्ण गोवा भ्रमण किया जिसमे संत फ्रांसिस चर्च ,डॉल्फिन का अवलोकन किया ,समुद्र में बहुत नहाकर आनंद लिया। इसके बाद काजू खरीदी कर यात्रा स्मरणीय बनायीं। एक दिन हम लोग पोंडा से लगभग 35 किलोमीटर दूर श्री महावीर उद्यान देखने गए वह पर भगवन महावीर स्वामी के काले पाषाण की मूर्ति के दर्शन हुए यह मूर्ति सन 2015 को मुनि श्री प्रणाम सागर द्वारा स्थापित कराई गयी थी। समयाभाव के कारण सुरम्य वन का भृमण नहीं कर सके पर स्थान अतिसुन्दर हैं।

गौर तलब बात यह हैं की पोंडा गोवा का एक उपनगर हैं जहाँ मात्र 6 घर के जैन परिवार हैं और चातुर्मास स्थल एक अजैन भाई का नव निर्मित भवन हैंजिसमे एक रत्न की मूर्ति विराजित कर मुनि श्री जैन धरम की प्रभावना कर रहे हैं। इस स्थान पर जैन मंदिर का निर्माण किया जा रहा हैं और उसमे एक स्कूल और महिलाओं के लिए प्रशिक्षण केंद्र बनाया जा रहा हैं। हम लोगों की आवसीय व्यवस्था एक बहुत विस्तीर्ण धर्मशाला में की गयी थीण् बहुत छोटी समाज ने मुनि श्री के आशीर्वाद से बहुत सुन्दर खाने पीने ठहरने के साथ आत्मीयता के साथ आतिथ्य सेवा की वह अत्यंत अनुकरणीय रही। मुनि श्री जैन धरम की प्रभावना के प्रति बहुत सजग और सक्रीय हैं ,उनका आशीर्वाद सबको भरपूर मिला और उन्होंने अपना साहित्य भेट किया जो हमारे लिए अमूल्य निधि रहेगी। कुल मिलकर संगोष्ठी बहुत सफल सिद्ध हुई और अन्य नए लोगों से भेट हुई और विचारों का आदान प्रदान हुआ।

इसके बाद हम लोग 26 ओक्टोबेर को मंगलोर से मूड बद्री पहुंचे। इस यात्रा में हम लोग कुल 20 लोग रहे। मूड बद्री को हम जैन काशी भी कहते हैं। यह तुलनाड के दक्षिण कन्नड़ जिले का छोटा सा शहर हैं। यह चरों और प्राकृतिक सौंदर्य से सुशोभित हैं। जैन धर्मियों के लिए यह धार्मिक दृष्टि से पुण्यतम क्षेत्र हैं। यहाँ पर 18 वसदी मंदिर हैं जो अपनी शिल्पकला ,और सुंदरता के लिए आकर्षण का केंद्र हैं। यहाँ पर भगवन पार्श्व नाथ की प्राचीन अतिशयकारी प्रतिमा हैं इस मंदिर में धवला ,जयधवला व महाधवला ग्रन्थ की मूल प्रतियां संरक्षित हैं। यहाँ पर नवरत्नों की मुर्तिया के दर्शन अद्भुत हैं।

यहाँ एक बात समझ में आयी जो की उत्तर भारत में भट्टारक के प्रति जो भ्रांतिया थी वह यहाँ आकर दूर हुई भट्टारक मूल रूप से क्षुल्लक श्रेणी में आते हैं और मठ के देखरेख के लिए इन्हे प्रशासक का कार्य भी सम्हालना पड़ता हैं इस कारण वे दो दायित्वों को सम्हालते हैं। वर्तमान में परम पूज्य ष्भारत भूषण ष् स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति पण्डिताचार्य स्वामी जी ,श्री जैन मठ मूड बद्री भट्टारक पद का कार्य भर सम्हाले हुए हैं। भट्टारक जी बहुत अधिक विद्वान् और कुशल प्रशासक के साथ शिक्षा आदि कई संस्थाओं का सञ्चालन करते हैं और इनके अधीन सैकड़ों गांव रहते हैं जिसके निरयण लेते हैं और जैन समाज ,जैन मंदिरों का संरक्षण करते है। ये विदेश जाकर धरम प्रभावना करते हैं।

यहाँ हम लोगों के नाश्ता कर आगे की यात्रा की। कारकाल में भगवान् बाहुबली भगवान की खड्गासन प्रतिमा हैं और उस मूर्ति के पीछे काले पाषाण की खड्गासन 24 तीर्थंकरों की सौम्य मूर्तियों के दर्शन कर आत्मिक शांति मिली। इसके बाद हम लोग ज्वाला मालिनी गए वह पर श्री लक्ष्मी सेन जी भट्टारक हैं। अत्यंत सौम्य और नवयुवक जिनके अधीन 700 गांव की बागडोर हैं और उसके साथ क्षेत्र का विस्तार, व्यवस्था, स्कूल सञ्चालन करते हैं। शाम को उनके साथ एक आत्मीय संगोष्ठी हुई। जिसमे सब लोगों ने अपने अपने विचार धरम, संस्कृति, शिक्षा और एकता पर रात्री 11 बजे तक चर्चा हुई।

डॉ. अरविन्द जैन

(ये लेखक के अपने विचार है)

देखा है

कुदरत को तस्वीर बदलते देखा हैं।
लोगों की तकरीर बदलते देखा है।
किसी समय जो सूरज बनकर छाए थे।
उनको खुद के साये से डरते देखा है।

ऊंचे चढ़े आसमां पर परवाज किया।
और लगे इतराने खुद की किस्मत पर।
किसी दूसरी पतंग ने काटी डोरी।
उलझे किसी शाख से औंधे मुंह गिर कर।

उनकी चौखट पर जो करते थे सजदे।
उन्हें देखते ही कतराते देखा है।
ढूंढ उन्होंने ली है एक नयी चौखट।
जाते उन्हें उधर ही मैंने देखा है।

जिन चेहरों को गुलाब सा खिलता देखा।
आज छुहारों सा उनको सिकुड़ा देखा।
मचबली बन जो उभरे थे दंगल में।
उन्हें पटखनी खाते मैंने देखा है।

नापा करते थे जो सारी दुनिया को।
बैसाखी से उनको चलते देखा है।
गली-गली में बजता था जिनका डंका।
गुमनामी में खोते उनको देखा है।

जिनके दरवाजे पर हुजूम रहता था
दर-दर उनको आज भटकते देखा है।
दुनिया का दस्तूर हमेशा रहा यही।
उगता ढलता सूरज सबने देखा है।

बीएल झा